संपादकीय

एक मान्य कहावत है कि 'हर सच का एक इतिहास होता है, और इतिहास से बड़ा झूठ इस दुनिया में कुछ भी नहीं होता'... वर्तमान मानव सभ्यता कई स्तरों पर अभूतपूर्व संक्रमण काल से गुजर रही है, कई विनाशकारी समस्याओं से जूझ रही है, तथा मानवीय मूल्यों की कसौटी पर निर्विवाद रूप से पतनोन्मुखी है। इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने का मार्ग तलाशने के लिए हमें मानव सभ्यता के विकास की प्रक्रिया को समझना होगा,और मानव सभ्यता के इतिहास को समझने के लिए हमें पृथ्वी और मानव की उत्पत्ति के इतिहास को समझना होगा।

मानव के उद्‌गम तथा उसके विकास को समझने से पहले हमें पृथ्वी के निर्माण एवं अन्य जीवधारियों की उत्पत्ति की प्रक्रिया को समझना बेहद जरूरी है। पर वर्तमान हकीकत तो यही है कि सृष्टि की उत्पत्ति तथा मानव के इतिहास के नाम पर जो कुछ भी जमा पूंजी हमने एकत्र किया है उसमें स्थापित आभासी सत्य के नाम पर इतने विपुल मात्रा में झूठे तथ्यों तथा अर्धसत्यों का कचरा एकत्र कर लिया है कि, अब इसमे सत्यान्वेषण का कार्य अत्यंत दुष्कर हो गया है। मिथकों, किंवदंतियों, मान्यताओं में से इतिहास का शोधन बड़ा कठिन है, हालांकि यह भी सत्य है कि कई बार यह मिथक, कथा, किंवदंतिया ही इतिहास की सुरागरसी में हमारी मदद भी करती हैं।

साक्षात्कार

पास में हुनर हो तो आप धनवान हैं

माटी शिल्पकार **बुशचन्द्र चक्रधारी** से **मधु तिवारी** की बातचीत

बुशचन्द्र चक्रधारी
(माटी शिल्पकार) जन्म- जनवरी 1976
निवास - कुम्हारपारा, कोण्डागांव
पिता - स्व. महादेव चक्रधारी
माता - स्व. तिलकबाई
मो. 9993291839

मधु तिवारी
संयुक्त संपादक, ककसाड़
मो. 09713125160

प्र. लगभग तीन-दशक से आप माटी-कला से जुड़े हैं, आपका रुझान कैसे हुआ इस ओर?

उ. परिवार में पिता खेती का काम करते थे और खाली समय में मां-पिताजी दोनों ही माटी के घड़े बनाया करते थे। हमारा संयुक्त परिवार रहा। चाचा भी सधे हुए प्रवीण माटी-शिल्पकार थे। लेकिन वे एकांत में अंदर कमरे में जाकर तरह-तरह की कलाकृति बनाया करते थे। यह देखकर मैं हमेशा सोचता कि कब उस कमरे में जाकर देखूं कि आखिर चाचा करते क्या हैं। क्योंकि चाचा हम बच्चों को वहां घुसने नहीं देते थे। तो उनसे बोलकर वहां जा पाना मुझे असंभव सा लगने लगा।

मैं चाचा के कहीं घर से निकलकर जाने के बाद तुरंत ही चुपके से जाकर उन कलाकृतियों को निहारता रहता। उनके द्वारा बनाई गई कलाकृतियां इतनी सम्मोहक होतीं कि मेरी नज़र उससे हटती ही नहीं थी। माड़िया-माड़िन कलाकृति मुझे बेहद पसंद आई थी। मैं भी मिट्टी लेकर छिप-छिप कर कलाकृतियां बनाता फिर तोड़ देता। ताकि चाचा को पता न चल पाये कि मैं उनकी गैरहाजरी में उनके कमरे में जाता हूं। मैं लगातार उनकी कलाकृतियां निहारता और फिर खुद से बनाने की कोशिश करता। मां ने हर बार मुझे देखा और एक दिन चाचा से बताया। चाचा ने मुझे कुछ बनाकर दिखाने को कहा। मैंने अपनी पूरी कल्पना उस कलाकृति में उतारने की कोशिश की, जिसे देखकर चाचा बहुत खुश हुए और फिर मुझे अपने साथ उस कमरे में ले जाकर मुझसे कहा ठीक से देख लो कल से तुम्हें 2 घंटे मेरे साथ यहीं बैठना होगा। इस तरह मेरा यह सफर शुरू हुआ।

प्र. अच्छा तो आपने सबसे पहले कौन सी कलाकृति तैयार की?

उ. मैंने अपने एक खिलौने को देखकर चलता हेलीकाप्टर बनाया था। उस समय मैं लगभग 9-10 वर्ष का था। अच्छी बात यह थी कि पूरे विज्ञान व तकनीक को समझते हुए उसे तैयार किया था जो थोड़ी ऊंचाई तक उड़ान भी भरता था। पूरे गांव में भीड़ लग गयी। लोग खुद देखकर, सभी अपने लोगों को साथ लाकर भी दिखाते। इसी बीच एक सज्जन जो एक सामाजिक संस्था के संस्थापक थे उन्होंने मुझे अपने साथ रखकर कला को आगे बढ़ाने के लिए पूरा सहयोग देने की बात कही। और मैं वहां से जुड़कर कार्य करने लगा।

प्र. कौन-कौन सी कलाकृतियां ज्यादातर तैयार की जा रही हैं आपके द्वारा?

उ. विभिन्न अवसर को देखते हम वस्तुएं तैयार करते हैं। जैसे- शादी के लिए विशेष रूप से रुखी, कलश, दिया, कलौंजा, टाठा, सुराही, मटका आदि बनाया जाता है। बरसात के समय ज्यादातर गुल्लक, दिया वगैरह तैयार करते हैं। फिर गणेश की प्रतिमा, दुगा की प्रतिमा तैयार की जाती है। वर्ष भर ऐसे ही काम चलता रहता है।